कक्षा–6

रुचिरा भाग 1

पाठ 5 – वृक्षाः

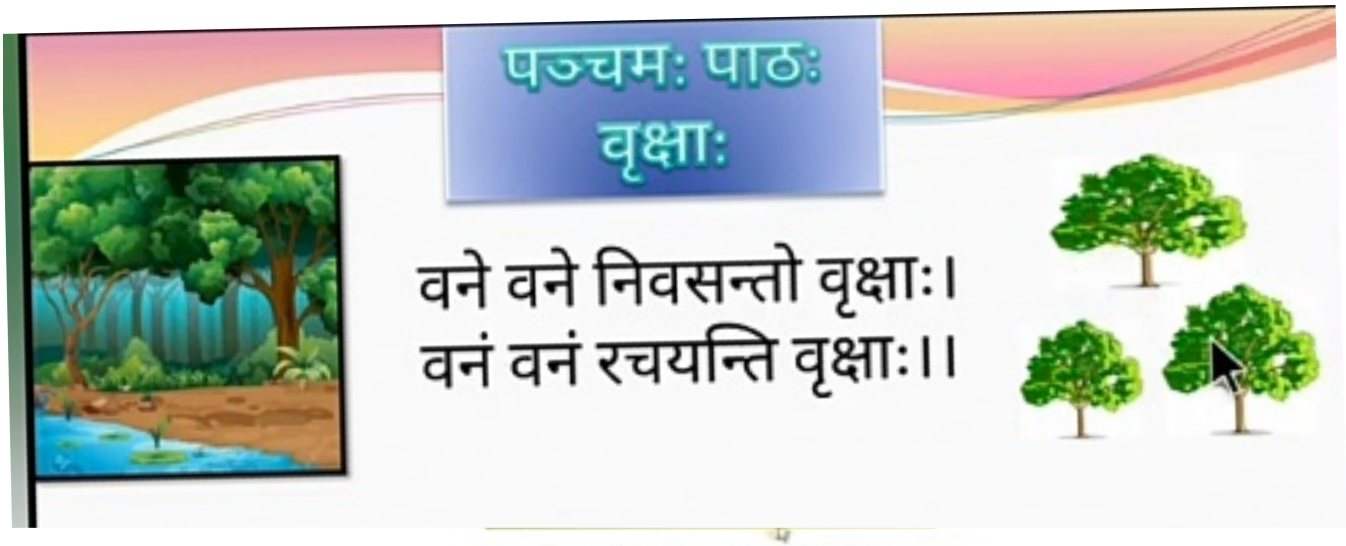

वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ।। 1 ।।

हिन्दी अर्थ– पेड़ प्रत्येक वन में रहने वाले हैं, वे प्रत्येक वन की रचना करते हैं। अर्थात् वनों में रहने वाले पेड़ों से ही वनों की रचना होती है।

K.Sharma

शब्दार्था – वने वने – प्रत्येक वन में
निवसन्तः – रहते हुए/रहने वाले
वृक्षाः – पेड़
वनं–वनम् – प्रत्येक वन
रचयन्ति – रचते हैं/ बनाते हैं

शाखादोलासीना विहगाः।
तैः किमपि कुजन्ति वृक्षाः।।

शाखादोलासीना विहगाः ।
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ।।2।।

हिन्दी अर्थ– पेड़ों की शाखा रूपी झूलों पर पक्षी बैठे हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे पक्षियों के कूकने के माध्यम से पेड़ भी कुछ–कुछ चहक रहे हैं।

शब्दार्थ –

शाखा	– डालियाँ
दोला	– झूला
आसीनाः	– बैठे हुए
विहगाः	– पक्षीगण
किमपि	– कुछ भी / कुछ–कुछ
कूजन्ति	– कूकते हैं

शाखदोलासीना विहगाः।
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः॥

पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम्।
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः||

पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम्।
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ।। 3।।

हिन्दी अर्थ– सभी पेड़ साधुओं जैसे हैं, जो लगातार हवा और पानी पीते हैं। अर्थात् पेड़ तपस्वियों की तरह केवल हवा और पानी पीकर जीवन यापन करते हैं।

K.Sharma

शब्दार्थ –

सन्ततम्	– निरन्तर/लगातार
साधुजनाः	– तपस्वी लोग/सज्जन
इव	– की तरह
पवनम्	– हवा
पिबन्ति	– पीते हैं

पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम् ।
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥
Shot on OnePlus

स्पृश्यन्ति पादैः पातालं च।
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः।। ।।

स्पृशन्ति पादैः पातालं च।
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ।। 4 ।।

हिन्दी अर्थ– पेड़ अपने (जड़ रूपी) पैरों से पाताल को छूते हैं और वे अपने सिर पर आकाश को ढोते हैं। अर्थात् पेड़ों की जड़ें धरती में बहुत गहरी हैं और ऊँचे –ऊँचे (गगनचुम्बी) पेड़ों को देखकर ऐसा लगता है जैसे पेड़ आसमान को अपने सिर पर धारण किया हुए हैं।

K.Sharma

शब्दार्था –

स्पृशन्ति	– स्पर्श करते हैं
पादैः	– पैरों से
पातालम्	– पाताल को
नभः	– आकाश
शिरस्सु	– सिर पर
वहन्ति	– ढोते हैं

स्पृशन्ति पादैः पातालञ्च ।
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥

पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् ।
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ।।

पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम्
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ।। 5 ।।

हिन्दी अर्थ– पेड़ अपने प्रतिबिम्ब को जलरूपी दर्पण में आश्चर्य से देख रहे हैं। अर्थात् झील के किनारे स्थित पेड़ों का प्रतिबिम्ब झील के पानी में दिख रहा है, जिससे ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे पेड़ पानी रूपी आइने में अपने प्रतिबिम्ब को आश्चर्य से देख रहे हैं।

K.Sharma

शब्दार्थ –

पयोदर्पणे	– जलरूपी दर्पण/आईने में
स्वप्रतिबिम्बम्	– अपने प्रतिबिम्ब को
कौतुकेन	– आश्चर्य से
पश्यन्ति	– देखते हैं

पयोदर्पणे स्वप्रति बिम्बम् ।
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥

प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ।।

प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम् ।
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ।। 6 ।।

हिन्दी अर्थ– पेड़ अपने छाया रूपी बिस्तर को फैलाकर सबका आदर–सत्कार करते हैं। अर्थात् पेड़ अपना छाया रूपी बिछौना बिछाकर सभी जीवों को अपनी छाया में विश्राम करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

K.Sharma

शब्दार्था – प्रसार्य – फैलाकर
स्वच्छायासंस्तरणम् – अपनी छाया रूपी बिस्तर को
(स्व + छाया + संस्तरणम्)
सत्कारम् – आदर
कुर्वन्ति – करते हैं

प्रसार्य स्वछाया-संस्तरणम् ।
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः ॥

वने वने निवसन्तो वृक्षाः ।
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः॥